हिंदी व्याकरण – लिंग

प्रा.डॉ.शैलजा रमेश पाटील महिला महाविद्यालय,कराड

Ling(Gender)(लिंग)

- लिंग(gender) की परिभाषा
- "संज्ञा के जिस रूप से व्यक्ति या वस्तु की नर या मादा जाति का बोध हो, उसे व्याकरण में 'लिंग' कहते है।
  दूसरे शब्दों में-संज्ञा शब्दों के जिस रूप से उसके पुरुष या स्त्री जाति होने का पता चलता है, उसे लिंग कहते है।
  सरल शब्दों में- शब्द की जाति को 'लिंग' कहते है।
- जैसे-
  पुरुष जाति- बैल, बकरा, मोर, मोहन, लड़का आदि।
  स्त्री जाति- गाय, बकरी, मोरनी, मोहिनी, लड़की आदि।

- 'लिंग' संस्कृत भाषा का एक शब्द है, जिसका अर्थ होता है 'चिह्न' या 'निशान'।
- किसी संज्ञा का ही होता है।
- 'संज्ञा' किसी वस्तु के नाम को कहते है और वस्तु या तो पुरुषजाति की होगी या स्त्रीजाति की।
- तात्पर्य यह है कि प्रत्येक संज्ञा पुंलिंग होगी या स्त्रीलिंग।
- संज्ञा के भी दो रूप हैं। एक, अप्रणिवाचक संज्ञा- लोटा, प्याली, पेड़, पत्ता इत्यादि और दूसरा, प्राणिवाचक संज्ञा- घोड़ा-घोड़ी, माता-पिता, लड़का-लड़की इत्यादि।

लिंग के भेद

- सारी सृष्टि की तीन मुख्य जातियाँ हैं- (1) पुरुष (2) स्त्री और (3) जड़। अनेक भाषाओं में इन्हीं तीन जातियों के आधार पर लिंग के तीन भेद किये गये हैं- (1) पुंलिंग (2) स्त्रीलिंग और (3) नपुंसकलिंग। अँगरेजी व्याकरण में लिंग का निर्णय इसी व्यवस्था के अनुसार होता है। मराठी, गुजराती आदि आधुनिक आर्यभाषाओं में भी यह व्यवस्था ज्यों-की-त्यों चली आ रही है।
- इसके विपरीत, हिन्दी में दो ही लिंग- पुंलिंग और स्त्रीलिंग- हैं। नपुंसकलिंग यहाँ नहीं हैं। अतः, हिन्दी में सारे पदार्थवाचक शब्द, चाहे वे चेतन हों या जड़, स्त्रीलिंग और पुंलिंग, इन दो लिंगों में विभक्त है।

हिन्दी व्याकरण में लिंग के दो भेद होते है-

- (1)पुलिंग(Masculine Gender)

  (2)स्त्रीलिंग(Feminine Gender)
- (1) पुलिंग :- जिन संज्ञा शब्दों से पुरूष जाति का बोध होता है, उसे पुलिंग कहते है।

  जैसे-

  सजीव- कुत्ता, बालक, खटमल, पिता, राजा, घोड़ा, बन्दर, हंस, बकरा, लड़का इत्यादि।

  निर्जीव पदार्थ- मकान, फूल, नाटक, लोहा, चश्मा इत्यादि।

  भाव- दुःख, लगाव, इत्यादि।

2)स्त्रीलिंग

- :- जिस संज्ञा शब्द से स्त्री जाति का बोध होता है, उसे स्त्रीलिंग कहते है।

  जैसे-

  सजीव- माता, रानी, घोड़ी, कुतिया, बंदरिया, हंसिनी, लड़की, बकरी,जूँ।

  निर्जीव पदार्थ- सूई, कुर्सी, गर्दन इत्यादि।

  भाव- लज्जा, बनावट इत्यादि

पुल्लिंग की पहचान

- (1) कुछ संज्ञाएँ हमेशा पुल्लिंग रहती है-
  खटमल, भेड़िया, खरगोश, चीता, मच्छर, पक्षी, आदि।
- (2)समूहवाचक संज्ञा- मण्डल, समाज, दल, समूह, वर्ग आदि।
- (3) भारी और बेडौल वस्तुओं- जूता, रस्सा, लोटा ,पहाड़ आदि।
- (4) दिनों के नाम- सोमवार, मंगलवार, बुधवार, वीरवार, शुक्रवार, शनिवार, रविवार आदि।
- (5) महीनो के नाम- फरवरी, मार्च, चैत, वैशाख आदि। (अपवाद- जनवरी, मई, जुलाई-स्त्रीलिंग)
- (6) पर्वतों के नाम- हिमालय, विन्द्याचल, सतपुड़ा, आल्प्स, यूराल, कंचनजंगा, एवरेस्ट, फ्जीयामा आदि।

स्त्रीलिंग की पहचान

स्त्रीलिंग शब्दों के अंतर्गत नक्षत्र, नदी, बोली, भाषा, तिथि, भोजन आदि के नाम आते हैं; जैसे-

(i) कुछ संज्ञाएँ हमेशा स्त्रीलिंग रहती है- मक्खी ,कोयल, मछली, तितली, मैना आदि।

(ii) समूहवाचक संज्ञायें- भीड़, कमेटी, सेना, सभा, कक्षा आदि।

(iii) प्राणिवाचक संज्ञा- धाय, सन्तान, सौतन आदि।

(iv) छोटी और सुन्दर वस्तुओं के नाम- जूती, रस्सी, लुटिया, पहाड़ी आदि।

(v) नक्षत्र- अश्विनी, रेवती, मृगशिरा, चित्रा, भरणी, रोहिणी आदि।

(vi) बोली- मेवाती, ब्रज, खड़ी बोली, बुंदेली आदि।

(vii) नदियों के नाम- रावी, कावेरी, कृष्णा, यमुना, सतलुज, रावी, व्यास, गोदावरी, झेलम, गंगा आदि।

(viii) भाषाओं व लिपियों के नाम- देवनागरी, अंग्रेजी, हिंदी, फ्रांसीसी, अरबी, फारसी, जर्मन, बंगाली आदि।

लिंग-निर्णय

- तत्सम (संस्कृत) शब्दों का लिंग-निर्णय
- संस्कृत पुंलिंग शब्द
- पं० कामताप्रसाद गुरु ने संस्कृत शब्दों को पहचानने के निम्नलिखित नियम बताये है-

  (अ) जिन संज्ञाओं के अन्त में 'त्र' होता है। जैसे- चित्र, क्षेत्र, पात्र, नेत्र, चरित्र, शस्त्र इत्यादि।
- (आ) 'नान्त' संज्ञाएँ। जैसे- पालन, पोषण, दमन, वचन, नयन, गमन, हरण इत्यादि।

  अपवाद- 'पवन' उभयलिंग है।

- (इ) 'ज'-प्रत्ययान्त संज्ञाएँ। जैसे- जलज,स्वेदज, पिण्डज, सरोज इत्यादि।
- (ई) जिन भाववाचक संज्ञाओं के अन्त में त्व, त्य, व, य होता है। जैसे-
  सतीत्व, बहूत्व, नृत्य,
  कृत्य, लाघव, गौरव, माधुर्य इत्यादि।
- (उ) जिन शब्दों के अन्त में 'आर', 'आय', 'वा', 'आस' हो। जैसे- विकार,
  विस्तार, संसार, अध्याय, उपाय,
  समुदाय, उल्लास, विकास, ह्रास इत्यादि।
  अपवाद- सहाय (उभयलिंग), आय (स्त्रीलिंग)।

संस्कृत स्त्रीलिंग शब्द

- पं० कामताप्रसाद गुरु ने संस्कृत स्त्रीलिंग शब्दों को पहचानने के निम्नलिखित नियम बताये है-

  (अ) आकारान्त संज्ञाएँ। जैसे- दया, माया, कृपा, लज्जा, क्षमा, शोभा इत्यादि।
- (आ) नाकारान्त संज्ञाएँ। जैसे- प्रार्थना, वेदना, प्रस्तावना, रचना, घटना इत्यादि।
- (इ) उकारान्त संज्ञाएँ। जैसे- वायु, रेणु, रज्जु, जानु, मृत्यु, आयु, वस्तु, धातु इत्यादि।

  अपवाद- मधु, अश्रु, तालु, मेरु, हेतु, सेतु इत्यादि।
- (ई) जिनके अन्त में 'ति' वा 'नि' हो। जैसे- गति, मति, रीति, हानि, ग्लानि, योनि, बुद्धि,

  ऋद्धि, सिद्धि (सिध् +ति=सिद्धि) इत्यादि।

- (उ) 'ता'-प्रत्ययान्त भाववाचक संज्ञाएँ। जैसे- नम्रता, लघुता, सुन्दरता, प्रभुता, जड़ता इत्यादि।
- (ऊ) इकारान्त संज्ञाएँ। जैसे- निधि, विधि, परिधि, राशि, अग्नि, छवि, केलि, रूचि इत्यादि।

  अपवाद- वारि, जलधि, पाणि, गिरि, अद्रि, आदि, बलि इत्यादि।
- (ऋ) 'इमा'- प्रत्ययान्त शब्द। जैसे- महिमा, गरिमा, कालिमा, लालिमा इत्यादि।

Thanks/धन्यवाद

-

- Thanks/धन्यवाद